सपने में स्वयं को किसी दूसरे देश में देखना।

जैसा कि हम जानते हैं, जब कोई व्यक्ति अपने मूल निवास स्थान से अलग किसी जगह की यात्रा करता है, तो उसे अनेक प्रकार के बदलावों का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से जब वह सीमाएँ पार करके किसी दूसरे देश में प्रवेश करता है, तो वहाँ का मौसम अलग हो सकता है, लोग अलग समुदाय के हो सकते हैं, भाषा भिन्न हो सकती है, और संस्कृति भी नई होती है।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति स्वयं को उतना स्वतंत्र महसूस नहीं करता, जितना अपने ही देश में करता है। कभी-कभी वह स्वयं को असुरक्षित भी महसूस कर सकता है, क्योंकि वह उसका अपना देश नहीं होता और वह वातावरण उसे जाना-पहचाना नहीं होता।

जब इस्राएल के लोग बंदी बनाकर बाबुल ले जाए जा रहे थे, तो वे मार्ग में बहुत रोए। यहाँ तक कि जब कसदियों (कसदियों/काल्दियों) ने उनसे उनके देश के गीत गाने के लिए ज़ोर डाला, तो उन्होंने मना कर दिया। उन्होंने कहा,
“हम परदेश में रहकर प्रभु का गीत कैसे गाएँ?”

भजन संहिता 137:1-4
“1 बाबुल की नदियों के किनारे हम बैठे,
हाँ, सिय्योन को स्मरण करके रोए।
2 उसके बीच के वृक्षों पर
हमने अपनी वीणाएँ टाँग दीं।
3 क्योंकि वहाँ हमारे बंदी बनाने वालों ने हम से गीत गाने की माँग की,
और हमारे सताने वालों ने कहा,
‘हमें सिय्योन के गीतों में से कोई गीत सुनाओ।’
4 हम परदेश में रहकर
यहोवा का गीत कैसे गाएँ?”

वे यह भली-भाँति जानते थे कि वे ऐसे देश में जा रहे हैं जो उनका अपना नहीं था—एक ऐसी नई संस्कृति और वातावरण में, जिससे वे परिचित नहीं थे।

इसी प्रकार, जब आप अपने सपने में स्वयं को किसी परदेश में रहते हुए या वहाँ घूमते हुए देखते हैं, तो इसके माध्यम से परमेश्वर आपको दो बातों में से एक बात दिखा सकता है।

पहली बात

यदि आप उद्धार पाए हुए हैं (अर्थात प्रभु यीशु मसीह द्वारा बचाए गए हैं), तो यह सपना आपको यह चेतावनी देता है कि यदि आप परमेश्वर की शरण से बाहर निकलेंगे, तो आपकी स्थिति कैसी होगी। आप एक दास के समान हो जाएँगे।
इसलिए अपने जीवन की जाँच करें, स्वयं को स्थिर रखें, और परमेश्वर की इच्छा में बने रहें। यदि आप आत्मिक रूप से ठंडे पड़ने लगे हैं, तो पूरे मन से अपने परमेश्वर की ओर लौट आइए, ताकि आप उस उद्धार की भूमि में बने रहें जिसके लिए उसने आपको ठहराया है।

दूसरी बात

यदि आप अभी उद्धार पाए हुए नहीं हैं, तो यह सपना आपकी वर्तमान आत्मिक स्थिति को दर्शाता है। आप एक परदेश में हैं, जबकि आपको वहाँ नहीं होना चाहिए। आपका जीवन परायापन लिए हुए है, इसलिए न तो आप स्वतंत्र हो सकते हैं और न ही सच्ची शांति पा सकते हैं—चाहे वह स्थान देखने में कितना भी अच्छा क्यों न लगे।

इस्राएल के लोग परदेश जाते समय रोए। उसी प्रकार, जो व्यक्ति पाप में जी रहा है, वह भी आत्मिक रूप से परदेशी है। संभव है कि जिन संगतियों में आप चलते हैं, वे वे लोग न हों जिनके साथ परमेश्वर चाहता है कि आप चलें। परमेश्वर चाहता है कि आप अपने जीवन को पवित्र लोगों के साथ बिताएँ और स्वर्गीय जीवन पर मनन करें।

हो सकता है कि नशा, विलासिता, चोरी आदि बातें आपके जीवन में हों। आप स्वयं जानते हैं कि ये बातें आपके योग्य नहीं हैं, फिर भी आप उनसे चिपके हुए हैं।

ज़रा अपने जीवन पर विचार कीजिए—पाप के जीवन से आपको अब तक कौन-सा सच्चा सुख या लाभ मिला है?
आप क्यों न घर लौटने का निर्णय लें, ठीक उसी तरह जैसे वह उड़ाऊ पुत्र, जो दूर देश में अपनी संपत्ति उड़ा बैठा, परन्तु बाद में अपने पिता के पास लौट आया?

आज ही आप भी अपने स्वर्गीय पिता के पास लौटने पर विचार क्यों न करें? लंबे समय तक भटकने के बाद उससे क्षमा क्यों न माँगें?

बाइबल में हम कैन को देखते हैं, जिसने अपने भाई की हत्या की। वह पृथ्वी पर एक भटकने वाला व्यक्ति बन गया—जिसका कोई स्थायी निवास नहीं था।
क्या आप भी ऐसा ही जीवन जीना चाहते हैं—बिना ठिकाने के?

आज यदि आप अपने पापों से मन फिराएँ, तो यीशु आपको स्वीकार करेंगे और आपको क्षमा करेंगे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस धर्म या संप्रदाय से हैं। वह आपको अपने पास बुलाएँगे और आपके मन को सच्चा विश्राम देंगे।

यदि आप आज ऐसा करने के लिए तैयार हैं , तो मन -फिराव (पश्चाताप) की प्रार्थना के मार्गदर्शन के लिए नीचे दिए गए लिंक पर जाएँ।
प्रभु आपको आशीष द

Share on:
WhatsApp

Print this post